राष्ट्रपति भवन में साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्यिक सम्मिलन का आयोजन

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी और राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 'कितना बदल चुका है साहित्य? विषयक दो दिवसीय साहित्यिक सम्मिलन का उद्घाटन भारत की माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली में किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि 140 करोड़ देशवासियों के हमारे परिवार में अनेक भाषाएँ और अनगिनत बोलियाँ है तथा साहित्यिक परंपराओं की असीम विविधता है। लेकिन इस विविधता में भारतीयता का स्पंदन महसूस होता है। भारतीयता का यही भाव हमारे देश की सामूहिक चेतना में रचा-बसा है। मैं मानती हूँ कि सभी भाषाओं में लिखित साहित्य मेरा ही साहित्य है। उन्होंने गोपबंधु दास, रवींद्रनाथ ठाकुर, फकीरमोहन सेनापति, गंगाधर मेहर, प्रतिभा राय आदि को संदर्भित करते हुए कहा कि आज का साहित्य उपदेशात्मक नहीं हो सकता। साहित्य से प्रेरणा लेकर मनुष्य सपने देखता है और उन्हें साकार करता है। उन्होंने आगे कहा कि जैसे जैसे समाज और सामाजिक संस्थान बदले हैं, चुनौतियाँ और प्राथमिकताएँ भी बदली हैं और ऐसे ही साहित्य में भी बदलाव देखे गए हैं। लेकिन स्थायी मानवीय मूल्य की स्थापना कालजयी साहित्य की पहचान होती है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि साहित्य समाज के, समाज की भावनाओं के और समाज की स्थितियों के दर्पण स्वरूप है तथा दर्पण होने के साथ-साथ यह समाज के मार्गदर्शन का काम भी करता है।

उन्होंने आगे कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारा देश सांस्कृतिक पुनरुद्धार के दौर से गुजर रहा है। ऐसी स्थिति में साहित्य सृजकों की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। कार्यक्रम के आरंभ में संस्कृति मंत्रालय की विशेष सचिव और वित्तीय सलाहकार श्रीमती रंजना चौपड़ा ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करने वाली संस्थाओं में साहित्य अकादेमी एक अग्रणी तथा व्यापक प्रभाव वाली संस्था है। पिछले कुछ वर्षों में अकादेमी ने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं और अपनी सक्रियता से सबका ध्यान आकर्षित किया है। यह सम्मिलन भी अकादेमी की विशिष्ट सक्रियता का उल्लेखनीय उदाहरण है। उन्होंने आशा व्यक्त की यह सम्मिलन साहित्य के बदलावों के प्रति हमारी दृष्टि को और अधिक व्यापक करेगा। स्वागत भाषण के पश्चात् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु तथा पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत का अंगवस्त्रम और पुस्तक भेंट कर अभिनंदन एवं स्वागत किया।